Online at: https://researchtrendsjournal.com
Indexed Journal
ISSN No: 2584-282X
Peer Reviewed Journal



INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 4; Issue 4; 2026; Page No. 42-47

Received: 18-06-2026
Accepted: 14-07-2026
Published: 07-08-2026

मध्यकालीन भारत की राजनीति, समाज और संस्कृति में ख़्वाजासरा

Vinod

Research Scholar, Department of History, University of Delhi, India

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21887271

Corresponding Author: Vinod

सारांश

मध्यकालीन भारत में थर्ड जेंडर के इतिहास को समझने के लिए हमें विभिन्न ऐतिहासिक व पुरातात्विक स्रोतों का सहारा लेना पड़ता है। इन्ही स्रोतों के आधार पर हम इतिहास के विभिन्न विषयों को भी समझ सकते हैं। इस लेख में इतिहास के विभिन्न स्रोतों के आधार पर हम मध्यकालीन भारत में थर्ड जेंडर अर्थात् ख़्वाज़ासराओं (Eunuchs) की स्थिति, भूमिका और गतिविधियों को समझने का प्रयास करेंगे तथा इन ख़्वाज़ासराओं का राजनीति, समाज और संस्कृति में क्या योगदान था इसको भी जानेंगे।

ख़्वाज़ासरा उन लोगों को कहा जाता था जिन्हें विभिन्न कारणवश नपुंसक बनाया (Castration) जाता था या फिर वो लोग जो अपनी प्रकृति से ही दोनों लिंगो से इतर अपनी एक विशिष्ट पहचान रखते थे। युद्धबंदी के तौर पर, आर्थिक तंगहाली के कारण, गुलामों की ख़रीद-फ़रोख्त और सज़ा के तौर पर भी लोगों को ख़्वाज़ासरा बनाया जाता था, जिनको फिर घरेलू कार्यों के अलावा प्रशासनिक, सैन्य, दरबारी और सुरक्षा संबंधी सेवाओं में नियुक्त किया जाता था।

अकादमिक स्तर पर थर्ड जेंडर को लेकर अभी भी काफ़ी लंबी बहस चल रही हैं। थर्ड जेंडर की प्रकृति उनकी स्थिति तथा पितृसत्तात्मक समाज से संबंधित मुद्दों पर अकादमिक अध्ययन हाल ही में शुरू हुए हैं। हम यहाँ इस लेख में भी इन मध्यकालीन ख़्वाज़ासराओं को थर्ड जेंडर के तौर पर समझते हुए उनके बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।

इस लेख में हम यह जानेंगे कि किस प्रकार मध्यकालीन समाज, राजनीति और संस्कृति को इन ख़्वाज़ासराओं ने अपने कार्यों द्वारा प्रभावित किया ? मुख्यता हम यह भी जानेंगे कि इन ख़्वाज़ासराओं की गतिविधियाँ सिर्फ़ हरम (Inner palace) तक ही सीमित नहीं थी जैसा कि कुछ इतिहासकार अपने कार्यों में दिखाने का प्रयत्न करते हैं बल्कि इन ख़्वाज़ासराओं ने प्रशासन, सैन्य, दरबारी व सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी अपनी प्रमुख भूमिका निभाई थी।

कुछ ऐसे प्रश्नों को इस लेख में उठाया गया है जो कि अभी तक अकादमिक क्षेत्र में नहीं पूछे गए हैं, जैसे कि आख़िरकार इन ख़्वाज़ासराओं को समाज ने कहाँ तक सामाजिक स्वीकार्यता दी ? क्या उच्च पद पर आसीन ख़्वाज़ासराओं के निर्देशों का अन्य शासक वर्गों (अर्थात् अभिजात और उलेमा वर्ग) ने पालन किया होगा ? मध्यकाल में इन ख़्वाज़ासराओं को किस दृष्टि से देखा जाता था ? क्या उनके साथ अपनी विशिष्ट पहचान के कारण लिंग आधारित भेदभाव होता था ? आख़िरकार क्यों और कैसे औपनिवेशिक शासन के दौरान इन ख़्वाज़ासराओं की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक हैसियत गिरती गई ?

दिल्ली सल्तनत, क्षेत्रीय सल्तनतों (बंगाल, मालवा, गुजरात, दक्कन, जौनपुर) तथा मुगलकाल के दौरान इन ख़्वाज़ासराओं की गतिविधियों का वर्णन विभिन्न फ़ारसी व यूरोपीय यात्रियों के विवरणों से मिलता है जो कि मध्यकालीन भारत में थर्ड जेंडर, पितृसत्तात्मक समाज, लिंग और दासता आधारित विषयों को समझने में सहायक हो सकते हैं।

मुख्य शब्द: ख़्वाज़ासरा, हरम, अभिजात, उलेमा, दिल्ली सल्तनत, गुलाम, काफ़िर, हब्शी, हिजड़ा

प्रस्तावना

मध्यकालीन भारत के इतिहास में अधिकतर फारसी स्रोतों व विदेशी यात्रियों के विवरणों में ख़्वाजासराओं के बारे में कुछ-कुछ बिखरे हुए विवरण और घटनाएं देखने को मिल जाती हैं, जिनके द्वारा हम समाज में उनकी स्थिति के अनुसार

उनके इतिहास को समझ सकते हैं। मध्यकाल के दौरान उन सभी शहरी केंद्रों की संस्कृति, राजनीति और समाज में इन ख़्वाजासराओं को देखा जा सकता है जहाँ मुस्लिम तथा ग़ैर मुस्लिम सत्ताएं स्थापित हुई थीं और हरम, प्रशासन, दरबारी व सैन्य कार्यों में इन ख़्वाजासराओं को नियुक्त किया गया था। साथ ही साथ इन ख़्वाजासराओं को उच्च पदों से लेकर निम्न स्तर तक की जिम्मेदारियां भी दी गई थीं।

ख़्वाजासराओं के मध्य भी हम उस दौरान सामाजिक विभेदीकरण देखते हैं जहाँ नाज़िर ख़्वाज़ासरा उच्च स्थान प्राप्त थे जो अभिजात वर्गों की श्रेणी में आते थे, तो वहीं इनके अधीन भी कई निम्नवर्गीय गुलाम ख़्वाजासरा सेवारत थे। इथियोपियाई हब्शी ख़्वाजासराओं से लेकर हिन्दुस्तान के स्थानीय लोगों की कुछ संख्या भी ख़्वाजासरा बनाई जाती थी और उनकी खरीद-फरोख्त व उनका व्यापार किया जाता था।

मूल शब्द

तुर्की आधिपत्य की स्थापना के साथ ही साथ जब फारसी-तुर्की परंपराओं ने भारत में अपनी जड़ें जमा लीं तो मुस्लिम शासक वर्ग की संस्कृति का विकास विभिन्न शहरी केंद्रों में भी होने लगा। सूफियों द्वारा किए गए धार्मिक प्रसारवादी कार्यों द्वारा इन परंपराओं की पकड़ और भी अधिक क्षेत्रों में होने लगी थी। सुल्तानों और मुग़ल बादशाहों ने अपने इन दास ख़्वाजासराओं (Slave Eunuchs) को विभिन्न दायित्व सौंपे थे। ये ख़्वाज़ासरा सेना की कमान संभालते थे, सुल्तान के अंगरक्षक थे, साथ ही साथ हरम के कार्यों के अलावा महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक व सैन्य जिम्मेदारियां भी निभाते थे। अधिकांश ख़्वाजासराओं को अभिजात वर्ग की ही तरह उच्च पद प्राप्त थे यहाँ तक कि कुछ शासक वर्ग का हिस्सा भी थे। ज्यादातर ख़्वाजासराओं को अपने समकालीन दौर में तरक्की भी मिली।

कुछ गवर्नर, सलाहकार, सुरक्षाकर्मी और प्रहरी थे तो कुछ उस समय दासता से मुक्त होकर स्वतंत्र शासक भी बन बैठे थे। प्रांतीय स्तर पर भी कुछ ख़्वाजासराओं ने स्वतंत्र अधिकारों का उपभोग किया। वहीं कुछ शासकों के इन ख़्वाजासराओं के साथ ज़्यादा क़रीबी संबंध भी देखने को मिलते हैं।

मध्यकालीन स्रोतों में ख़्वाज़ासराओं के प्रति नज़रिया

ज़ियाउद्दीन बरनी की तारीख़-ए-फ़िरोज़शाही में और अमीर ख़ुसरो, ईसामी, तथा अन्य सल्तनतकालीन फारसी स्रोतों से लेकर मुग़लकालीन स्रोतों और मनूची, बर्नियर, पेलसार्ट, टैवरनियर, मॉन्सरेट,व अन्य विदेशी यात्रियों के विवरणों में इन ख़्वाजासराओं की नकारात्मक छवियां दर्शाई गई हैं, क्योंकि इन ख़्वाजासराओं की शारीरिक बनावट व प्रमुख पदो पर आसीन होने के कारण इनकी पहुँच हरम की प्रमुख महिलाओं से लेकर शासकों के दरबारों तक थी। तथा समाज का नजरिया भी इन ख़्वाजासराओं के प्रति सकारात्मक नहीं था।

बरनी और अन्य लेखक अभिजात वर्ग से संबंधित थे और अपने वर्ग की प्रधानता में विश्वास करते थे जबकि ये ख़्वाजासरा निम्न तबकों (Marginal sections) से थे। उनके कृत्यों की बरनी ने बड़े विचित्र ढंग से आलोचना की है। सत्ता में बने रहने के लिए जो भी कार्य मलिक काफ़ूर हज़ारदीनारी और ख़ुसरो ख़ाँ ने किए उसको बरनी सहन नहीं कर पाता और ऐसी भाषा का प्रयोग करता है जो एक सभ्य समाज में भी नहीं कही जा सकती। इन दोनों सैन्य प्रमुख ख़्वाजासराओं के प्रति बरनी का नजरिया निम्नतर था। ख़ुसरो ख़ाँ के लिए तो बरनी अभद्र भाषा तक का प्रयोग करता है और उसके लिए उसे माबून (गुदा-भोग्य), महबूब कूनपारा (फटी हुई गुदा रखने वाला), मफऊल (गुदा मैथुन करवाने वाला), ज़रे ख़ुस्प (किसी के नीचे सोने वाला), नामर्द, काफ़िर, और दुष्ट तक कह कर उसकी भर्त्सना करता है।

बरनी मलिक काफ़ूर और ख़ुसरो ख़ाँ के बुरे आचरणों और कृत्यों के कारण उनके व्यक्तित्व से रूष्ट था, जिन्होंने खिलजी वंश के विनाश में कोई कसर नहीं छोड़ी थी इसलिए वह इन शब्दों का प्रयोग करता है। अन्य सल्तनतकालीन फारसी स्रोतों में भी इसी प्रकार के शब्दों का प्रयोग इन दोनों ख़्वाजासराओं के लिए किया गया है साथ ही साथ ख़्वाजासराओं की दरबारी चालबाजियों की आलोचना व भर्त्सना भी की गई है।

मुग़लकाल में भी मनूकी के विवरण से ख़्वाजासराओं के चरित्रों को दर्शाया गया है और इनकी तुलना जानवरों से की गई है। ज़्यादातर स्रोतों में ख़्वाजासराओं के प्रति हमें नकारात्मक और द्वेषवादी चित्रण ही देखने को मिलता है। मध्यकालीन पितृसत्तात्मक ढांचे के अंतर्गत इन ख़्वाजासराओं को अधिकतर पुरुष एक कलंक के तौर पर देखते थे और उनकी हैसियत समाज में निम्नतर ही आंकी गई। अबुल फ़ज़ल ने अपने ग्रंथ अकबरनामा में तीन तरह के ख़्वाज़ासराओं का ज़िक्र किया है जिसमें पहला संदाली (अत्लाशी) थे दूसरे बदामी और तीसरे प्रकार के ख़्वाजासरा काफ़ूरी की श्रेणी में आते थे।

सल्तनत काल से लेकर मुग़ल काल तक में युद्ध के दौरान बंदी बनाए गए कैदियों को या व्यापार के जरिए खरीदे गए हब्शी गुलामों को पकड़कर उन्हें नपुंसक (castration) बनाया जाता था। सल्तनत काल में बख्तियार खिलजी ने अपने बंगाल अभियान के दौरान स्थानीय लोगों को युद्धबंदी के तौर पर ख़्वाजासरा बनाया था। अफ्रीका के पूर्वी तट के देशों के साथ-साथ और पश्चिमी एशिया के साथ भी हिंदुस्तान के व्यापारिक संबंध थे जहाँ से इन ख़्वाजासराओं की खरीद-फरोख्त की जाती थी।

अफ्रीका के मोम्बासा में छोटे बच्चों को उनके शुरुआती यौवनकाल में ही ख़्वाजासरा बनाया जाता था और उनको विभिन्न मुस्लिम साम्राज्य (सफ़ाविद, ऑटोमन और फ़ातिमिद) में बेचा जाता था। गुजरात का कैम्बे (खंभात) व केरल का मालाबार बंदरगाह उस दौरान इन ख़्वाजासराओं के व्यापार का मुख्य बंदरगाह था। मुग़लकाल में भी बंगाल के घोराघाट और सिलहट प्रांतों में उन युद्धबंदियों और बच्चों को ख़्वाजासरा बनाया जाता जो राज्य को राजस्व देने में असमर्थ होते। हमें इस दौर में इनकी उपस्थिति शासन-प्रशासन के हर क्षेत्र में देखने को मिलती है।

सल्तनत और मुग़लकालीन ख़्वाज़ासरा

कुछ मुख्य ख़्वाजासराओं ने मध्यकाल की संस्कृति और राजनीति को अपने कार्यों द्वारा प्रभावित भी किया तथा मध्यकालीन संस्कृति के निर्माण में उनकी भूमिका और योगदान को देखा भी जा सकता है। कुछ ऐसे ख़्वाजासरा जो दिल्ली सल्तनत के दौरान उच्च पदों पर पहुँचे थे और जो शासक वर्ग का हिस्सा थे उनमें इमादुद्दीन रैहान (सुल्तान नसीरुद्दीन महमूद के समय मंत्री था), मलिक काफ़ूर हज़ारदीनारी (जो मलिक नायब और सेना का मुख्य था व सुलतान अलाउद्दीन का चहेता था) प्रमुख थे।

वहीं सुलतान मुबारक शाह खिलजी के शासनकाल में मलिक संबल, हसन बरवार (ख़ुसरो ख़ाँ) और उसका भाई हुसामुद्दीन मुरतद मुख्य थे। गयासुद्दीन तुग़लक़ के समय ख़्वाजासराओं के बारे में ज़्यादा ज़िक्र तो नहीं मिलता लेकिन हरम की गतिविधियों में वे शामिल थे। सुलतान मुहम्मद बिन तुग़लक़ और फ़िरोज़ शाह तुग़लक़ के दासों में कुछ संख्या इन ख़्वाजासराओं की थी जो हरम व सुरक्षा संबंधी कार्यों में नियुक्त थे।

क्षेत्रीय सल्तनतों में जौनपुर में स्वतंत्र शासन स्थापित करने में हब्शी मलिक सरवर ख़्वाजासरा का नाम उल्लेखनीय है। वहीं बंगाल में इथियोपियाई मूल के हब्शी शासकों में दो सुलतान, शहज़ादा बारबक शाह (1487-88) व सीधी बद्र दीवाना अर्थात सुलतान शम्सुद्दीन (1491-94) मुख्य ख़्वाजासरा थे। दक्कन और गुजरात में भी इन हब्शी ख़्वाजासराओं को मुख्य प्रशासनिक व सैन्य कार्य सौंपे गए थे। ये दास ख़्वाजासरा वहाँ राजमहल के पहरेदार थे, सुलतान के निजी अंगरक्षक थे, हरम में सुरक्षा की जिम्मेदारी और निगरानी रखना भी उनके कर्तव्यों के अंतर्गत आता था।

मुग़लकाल में अकबर के समय जब हरम एक सुस्थापित संस्था बन गई तब इन ख़्वाजासराओं को व्यापक जिम्मेदारियां मिलीं। जहाँगीर और बाद में औरंगज़ेब इन ख़्वाजासराओं पर अपने शासनकाल में धीरे-धीरे आश्रित होते गए और उत्तर मुग़लकाल में इन ख़्वाजासराओं की दरबारी गुटबंदियों व संघर्षों का विवरण भी हमें उस दौरान देखने को मिलता है जहाँ ये ख़्वाजासरा, सैय्यद बंधुओं व निज़ामुल मुल्क की तरह नृप-निर्माता (king maker) के साथ-साथ दरबार के सबसे अधिकार-संपन्न वर्ग के तौर पर भी दिखाई देते हैं। मुग़लकालीन कुछ मुख्य ख़्वाजासरा जैसे नाज़िर अंबर, फूल मलिक (एतमाद ख़ाँ), नियामत, जवाहर ख़ाँ, नदीम, एतबार ख़ाँ, फ़िरोज़ ख़ाँ, जावेद ख़ाँ, शाह कुली ख़ाँ महरम, बख्तावर ख़ाँ के नाम उल्लेखनीय हैं जो राजनीतिक व सामाजिक तौर पर अधिकार-संपन्न थे।

ख़्वाज़ासराओं का सांस्कृतिक क्षेत्र में योगदान

वहीं इन ख़्वाजासराओं के द्वारा निर्मित स्थापत्य व शहरों जैसे फ़िरोज़ ख़ाँ का मक़बरा व हौज़, एतमाद ख़ाँ का मक़बरा व हौज़, सुनहरी मस्जिद, बारापुला ब्रिज, बाग़-ए-नाज़िर, बावली बस्ती ख़ाँ, बाज़ार मेहर बानो अगहा, एत्मादपुर, बख्तावर नगर आदि भी उनके सांस्कृतिक योगदान को प्रदर्शित करते हैं। मुग़लकालीन स्रोतों में विस्तृत तौर पर इन ख़्वाजासराओं की अन्य गतिविधियां भी देखी जा सकती हैं। उन्हें एतबार ख़ाँ और एतमाद ख़ाँ की पदवियां दी गई थीं जिसका अर्थ 'विश्वस्त व्यक्ति' होता है। अकबर से लेकर उत्तर मुग़लकाल तक दरबारी राजनीति और संस्कृति में अभिजात ख़्वाजासराओं के इतिहास व उनके कार्यों का विवरण भी हमें देखने को मिलता है।

फिर भी हमें यह देखने को मिलता है कि इन ख़्वाजासराओं के प्रति चाहे समाज का नजरिया नकारात्मक रहा हो कुछ ख़्वाजासराओं के द्वारा महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक और शासकीय कार्य किए गए। अपने नाम को इतिहास में दर्ज कराने के लिए कई ख़्वाजासराओं ने सांस्कृतिक तौर पर स्थापत्य कला में भी योगदान दिया, उन्होंने कई कस्बों को बसाया, सरायों, मस्जिदों, कुओं, तालाबों, हवेलियों, मक़बरों और

अन्य ऐतिहासिक इमारतों का निर्माण करवाया था, जो उनके अधिकार-संपन्न और राजनीतिक रुतबे को प्रदर्शित करता है।

मध्यकाल में हम देखते हैं कि इन ख़्वाजासराओं ने चाहे जितनी भी अहम भूमिका निभाई हो और मध्यकालीन संस्कृति, समाज और राजनीति में चाहे उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा हो, समाज में उनके कार्य और उनके चरित्र को हीन दृष्टि से ही देखा गया। मध्यकालीन पितृसत्तात्मक व्यवस्था में जहाँ पुरुषवादी सोच समाज पर हावी थी। ख़्वाजासराओं को सदैव पुरुषों ने अपने से निम्नतर माना और उनके साथ अमानवीय व्यवहार तक किया गया। इन ख़्वाजासराओं को उनके मालिकों की सदैव निजी संपत्ति माना जाता था जिसमें यह ख़्वाजासरा सामाजिक तौर पर गतिहीन और मनोवैज्ञानिक तौर पर बंधे हुए थे।

इन मध्यकालीन स्रोतों के आधार पर हम ख़्वाजासराओं के इतिहास को समझ सकते हैं और यह भी जान सकते हैं कि आख़िर जब उस दौर में उनकी राजनीतिक प्रतिष्ठा इतनी व्यापक थी तो परवर्ती काल में क्यों और कैसे उनकी सामाजिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक स्थिति गिर गई? और उन्हें ब्रिटिश काल में 'क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट (1871)' के द्वारा आपराधिक समुदाय घोषित कर दिया गया।

औपनिवेशिक शासन के दौरान हम देखते हैं कि इन ख़्वाजासराओं की हैसियत गिरती गई और वे एक समय हाशिए पर धकेल दिए गए। उत्तर मुग़ल काल में भी ये ख़्वाजासरा हैदराबाद, अवध (लखनऊ) और मुर्शिदाबाद की स्वतंत्र रियासतों में विभिन्न जिम्मेदारियां निभाने थे जबकि ज्यादातर ख़्वाजासराओं को औपनिवेशिक भारत में भांड, दलाली और वेश्यावृत्ति जैसे निम्नतर कार्यों में देखा गया। जहाँ मध्यकाल के दौरान इनका जीवन ऐश्वर्य, आलीशान और भव्य तौर-तरीकों से व्यतीत होता था वहीं परवर्ती काल में इनके कार्य और चरित्र को आपराधिक मान कर हाशिए पर धकेल दिया गया। ब्रिटिश काल में इन ख़्वाजासराओं को हिजड़ा (Hijra) समुदाय के नाम से जाना गया जिनको अभी तक समाज में सम्मानजनक दृष्टि से नहीं देखा जाता है उनसे निम्नतर और अमानवीय व्यवहार समाज में उनकी गिरती स्थिति को ही दर्शाता है।

अगर इन ख़्वाज़ासराओं के प्राचीन इतिहास को देखा जाये तो यह कहा जा सकता है कि ये ख़्वाज़ासरा चीन, ग्रीक, रोमन और मिस्री साम्राज्य में भी सक्रिय भूमिका निभा रहे थे। ये ख़्वाज़ासरा मुस्लिम संस्कृति के तत्व बाद में बने जब उमैय्यद और अब्बासी ख़िलाफ़त स्थापित हुई। हरम केंद्रित गतिविधियों से धीरे धीरे ये ख़्वाज़ासरा अन्य कार्यों में भी अपनी जगह बनाने लगे। ज़्यादातर इथियोपियाई हब्शी गुलामों को व्यापार के ज़रिए ख़्वाज़ासरा बनाया गया और गुजरात, दक्कन और बंगाल में सैन्य ज़िम्मेदारियाँ दी गईं। बंगाल तो सल्तनत काल से लेकर उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक हब्शी और स्थानीय लोगों को ख़्वाज़ासरा बनाने की प्रक्रिया का हिस्सा था जहाँ से यह महत्वपूर्ण व्यापार होता था। ये ख़्वाज़ासरा शानो शौकत भरी ज़िन्दगी जीते थे जिसको इनके द्वारा निर्मित किए गए स्थापत्य द्वारा भी देखा जा सकता है। मुग़लकालीन सांस्कृतिक विकास में अपने दरबारी, मध्यस्थ, बादशाह से क़रीबी संबंधों और स्थापत्य कार्यों द्वारा भी हम इनके योगदान को समझ सकते हैं। इन ख़्वाज़ासराओं कि जिंदगी में सबसे बड़ा बदलाव तब होता था जब इन्हें नपुंसक बनाया जाता था और धीरे धीरे शारीरिक परिवर्तनों से इन्हें गुजरना पड़ता था, शारीरिक बनावट में आए बदलावों के कारण ही इनकी एक नई पहचान बन जाती थी। मध्यकाल में नपुंसक (Castration) बनाने कि कोई वैज्ञानिक प्रक्रिया नहीं थी, परंपरागत तरीकों से ही नपुंसक बनाने का कार्य मुस्लिम हकीम और भारतीय वैद्य के द्वारा किया जाता था जिसमे बहुत ही ज़्यादा ख़तरा होता था। ज्यादातर मामलों में तो नपुंसक बनाने की प्रक्रिया के दौरान ही मौत हो जाती थी, इसलिए भी इन ख़्वाज़ासराओं की समाज में एक अलग पहचान होती थी।

निष्कर्ष

थर्ड जेंडर की आधुनिक अवधारणा को देखा जाए तो यह कहा जा सकता है कि मध्यकालीन ख़्वाज़ासराओं ने ख़ुद को एक विशिष्ट समुदाय के तौर कभी नहीं देखा क्योंकि समकालीन दौर में थर्ड जेंडर की एक विशेष पहचान निर्मित नहीं हुई थी और न ही ये ख़्वाज़ासरा अपनी एक ख़ास पहचान को लेकर चेतना संपन्न थे। लेकिन फिर भी अपनी शारीरिक बनावट और विशेष कार्यों द्वारा इन ख़्वाज़ासराओं ने मध्यकालीन जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये ख़्वाज़ासरा निजी और सार्वजनिक जीवन के हर क्षेत्र में कार्यरत थे, महल की अंदरूनी दीवारों से लेकर बाहरी दुनिया तक में इन ख़्वाज़ासराओं को विभिन्न कार्य देकर स्थापित किया था। मध्यकालीन पितृसत्तात्मक समाज में अपनी जगह बनाने के लिए भी इन ख़्वाज़ासराओं ने विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा लिया।

सामाजिक स्वीकार्यता प्राप्त करने के लिए इन ख़्वाज़ासराओं ने महल, क़स्बे, शहर, बाउली, फ़व्वारे, मस्जिद, हौज, मक़बरे, सरायें, कुएँ आदि कई स्थापत्यों का निर्माण

करवाया। इनकी सामाजिक स्वीकार्यता का अंदाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता जब हम इनके द्वारा दिए गए शासकीय निर्देशों को देखते है जिसका आम लोगों और अन्य शासकीय वर्गों ने बिना भेदभाव और हिचकिचाहट के साथ पालन किया। हरम के अलावा ये ख़्वाज़ासरा सुल्तानों के सलाहकार, निजी अंगरक्षक, जासूसी और प्रमुख दरबारी कार्य भी करते थे। कई ख़्वाज़ासरा तो मध्यकालीन सूबों के गवर्नर और प्रशासक भी नियुक्त किये गए थे।

मध्यकालीन भारत में हमे कुछ कुछ ऐसे भी उदाहरण मिले है जब इन ख़्वाज़ासराओं को अपनी एक अलग पहचान के कारण दरबारी चालबाजियों का शिकार होना पड़ा जहाँ हरम में दिए गए कार्यों के न किए जाने के कारण या उसके उल्लंघन होने से इन ख़्वाज़ासराओं को विभिन्न तरह से सजाएँ भी मिली। मध्यकालीन स्रोतों के आधार पर यह कहना तो मुश्किल है कि ख़्वाज़ासराओं द्वारा दोनों लिंगों से इतर कोई पहचान का निर्माण किया गया होगा लेकिन इतना कहा जा सकता है कि इसके लिए इन ख़्वाज़ासराओं ने प्रयत्न ज़रूर किए होंगे। निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि मध्यकालीन भारत में इन ख़्वाज़ासराओं (Eunuchs) ने भी राजनीति, समाज और सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपनी भूमिका निभाई तथा स्थापत्य कला में अपना योगदान दिया।

Bibliography

1. The history of the khaljis (AD 1290-1320) kishori saran lal, munshiram Manoharlal publishers private limited Delhi 1980.
2. Transgenders in india; An introduction: Veerendra Mishra, Routledge, Taylor and Francis group 2023.
3. Altered Bodies, Altered Lives; The Making of Eunuch Slaves in Mughal India: Shreejita Basak 2023.
4. Gender, Slavery and Law in Colonial India: Indrani Chatterjee, Oxford University press 1999.
5. A note on the trade in eunuchs in mughal Bengal: journal of the American oriental society, Gavin Hambly 1974.
6. Mughal Harem: Aditya Prakashan,Kishori Saran Lal 1988.
7. The Mughals of India: Harbans Mukhia, Blackwell publishing 2004.
8. Eunuchs and Slaves in medieval Indian social order; Dilemma of the marginl sections in Mughal society and culture: Lubna Irfan 2017.
9. A Eunuchs at the threshold: mediating access and intimacy In the Mughal world, cambridge university press, Emma kalb 2023.
10. Third zender and service in the Mughal court and harem, servant's past sixteenth to eighteen century south Asia volume 1, Lubna Irfan 2019.
11. Harem and Eunuchs: liminality and networks of Mughal authority in celibate and childless men in power, ruling Eunuchs and Bishops in the pre-modern world New York Routledge, Ruby lal 2018.
12. Domesticity and power in the early Mughal world, cambridge university press, Rubylal 2005.
13. Slavery in South Asian history edited by Richard M. Eaton and indrani chatterjee, indiana university press 2006.
14. Slave markets in medieval India by shadab Bano proceedings of the Indian history Congress, 2006.
15. Between slave and disciples in South Asia, Jessica hinchy, in slavery and bonded labour in Asia 1250-1900 edited by Richard B. Allen, 2021.
16. Aurangzeb's Eunuch slave bakhtawar Khan and his passion for the history by shreejita basak 2023.
17. Slavery in South Asia, Emma kalb, the palgrave handbook of global slavery throughout history. 2023
18. Eunuchs in antiquity and beyond, Editor Shaun tougher, the classical press of wales and duckworth,2002.
19. Nature of slavery and servitude in Mughal India by Lubna Irfan, south Asian history and culture, Routledge 2022.

20. Leaving a Lineage in Stone; Eunuchs in Socio-Spatial Setup of Mughal India by Lubna Irfan,in Making the woman discourses of gender in 18th and 19th century India edited by sutapa Dutta and shivangini Tandon,2023.
21. Muslim slave system in medieval India: K.S. Lal, Aditya Prakashan (1994).
22. Same sex love in India: readings from literature and history: Ruth vanita and Saleem kidwai, palgrave, 2001
23. Alienation, intimacy, and zender; problems for a history of love in South Asia: indrani Chatterjee in Queering India; same sex love and eroticism in Indian culture and society: Ruth vanita, 2002.
24. The habshi rule of Bengal: Muhammad Ahmed Ullah, medieval and early modern Orients, 2021.
25. A comprehensive history of India volume 5 the Delhi sultanate AD 1206-1526: Muhammad Habib and khaliq Ahmed Nizami, people's publishing house Bombay,1970.
26. मुग़ल हरम, समकालीन राजनीति, समाज एवं महिलाएँ, शमऊन अहमद, शारदा पब्लिकेशन हाउस दिल्ली 2011.
27. ख़लजी कालीन भारत (1290-1320): डॉ अतहर अब्बास रिजवी, हिस्ट्री डिपार्टमेंट, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, 1995.
28. उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग 2, उत्तर भारत के स्वतन्त्र प्रांतीय राज्य (1399-1526); सैय्यद अतहर अब्बास रिज़वी हिस्ट्री डिपार्टमेंट, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, 1959.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.